हमले का विश्लेषण

लेखक - सैयद अता हसनैन (श्रीनगर स्थित 15 सैन्य-दल के एक पूर्व कमांडर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (आन्तरिक सुरक्षा) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

27 अप्रैल, 2019

"आईएसआईएस द्वारा श्रीलंका में हुए आतंकी हमले की जिम्मेदारी लेना इस उपमहाद्वीप में खतरे की नई चुनौतियों की ओर इशारा करता है।"

परमेश्वर प्राय: 21 मिलियन लोगों वाले द्वीपीय देश के लिए निर्दयी रहा है। इतनी सुंदर भूमि और इतने अच्छे लोग होने के बावजूद श्रीलंका को विभिन्न रूपों की हिंसा का सामना करना पड़ता रहा है। अभी हाल ही में हुए नरसंहार जिसमें सात संदिग्ध आत्मघाती हमलावरों ने आठ स्थानों पर 250 से अधिक लोगों की जान ले ली, जाहिर तौर पर कुछ बड़े पैमाने पर गुप्त रूप से इन आतंकियों को बाहरी समर्थन मिलने की ओर इशारा करता है। चूंकि जांच चल रही है, इसलिए इस्लामिक संस्था नेशनल तौहीद जमात **(NTJ)** के बारे में अभी तक सिर्फ अटकले लगाई जा रही है।

ऐसा अनुमान है कि यह एक कट्टरपंथी इस्लामिक समूह है, जो 2017 में बौद्ध कट्टरपंथी समूह बोडू बाला सेना द्वारा कथित तौर पर श्रीलंका में मुस्लिम अल्पसंख्यक के खिलाफ एक अभियान चलाये जाने के बाद सुर्खियों में आ गया था। इस स्तर पर, यह मानना पर्याप्त है कि नरसंहार के पीछे धार्मिक और जातीय मतभेद हैं। इस्लामिक स्टेट (आईएस) ने हाल ही में इस घटना की जिम्मेदारी ली है। फिर भी, अंतर्राष्ट्रीय संबंध अंतर्राष्ट्रीय आतंक, इस्लामवादी नेटवर्क की जटिलतों को एक साथ जोड़ता हैऔर ऐसी स्थिति लिट्टे (LTTE) के साथ 2009 के युद्ध और अन्य घटनाओं के बाद की है। कैसे यह मिश्रण एक शांत द्वीपीय देश राष्ट्र में शामिल हुआ, शायद इसकी गहन जांच की आवश्यकता है। इस समय, हम सबसे अच्छे रूप में, केवल अनुमान ही लगा सकते हैं।

प्राप्त जानकारी इसके उद्देश्य, क्षमता और विचारों का आकलन करने में मदद कर सकते हैं। यह श्रीलंका में सांप्रदायिक हिंसा की अपार संभावनाओं के साथ शुरू होता है। लिट्टे हार चुका है, जो फिर से उठना चाहेगा क्योंकि तमिल आबादी अलग-थलग है। और शायद यह भी उतना ही वशीभूत है, जितना यह गृहयुद्ध के 30 वर्षों के दौरान था। सरकार ने इसके पुनरुत्थान को रोकने के लिए बहुत कम काम किया है और प्रवासी नेटवर्क पूरी तरह से जीवित हैं।

LTTE के प्रतिशोध के साथ एक दिन लौटने की उम्मीद है, लेकिन अभी तक ऐसा हुआ नहीं है। इसके अलावा, लिट्टे द्वारा ईसाइयों और उनके पूजा स्थलों को निशाना बनाने की संभावना नहीं है क्योंकि कई लोग खुद ईसाई हैं। उनके लिए किसी अन्य अंतर्राष्ट्रीय समूह की सहायक के रूप में कार्य करने की संभावना कम से कम है। भारत की अंतर्राष्ट्रीय खुफिया एजेंसियों ने 11 अप्रैल को श्रीलंका को चेतावनी दी थी कि एनजेटी (NJT) द्वारा ईस्टर के आसपास आतंकी कार्रवाई की जा सकती है।

श्रीलंका में 7.4 प्रतिशत मुस्लिम अल्पसंख्यक हैं एक अनिर्धारित संख्या वहाबी संप्रदाय की है और अन्य सूफी हैं। हालाँकि, इस देश के बहुसंख्यक और कठोर राष्ट्रवाद में, सिंहल बौद्धों के अलावा सभी पर राष्ट्रविरोधी होने का संदेह है। विभिन्न धार्मिक विश्वासों और समूहों के बीच आंतरिक गृह युद्ध और आंतरिक हिंसा के वर्षों के आधार पर एक अविश्वास मौजूद है। भारत की बड़ी छाया के तहत एक द्वीप राष्ट्र के रूप में, जहां 190 मिलियन मुसलमान रहते हैं,इसकी सांप्रदायिकता की उपेक्षा की जाती है। यह सिर्फ दो स्थिति को दर्शाती है पहला, अंतर्राष्ट्रीय कट्टरपंथी चरमपंथी क्षमता का प्रदर्शन; दूसरा यह संदेश भेजना की दुनिया भर में ये आतंकी नेटवर्क मौजूद

है, जिसका नियंत्रण मुख्य संगठनों द्वारा किया जाता हैं। यही कारण है कि संदेह की उंगली आईएस की पुष्टि की ओर इशारा करती है, जिसने नरसंहार का दावा किया है।

मध्य पूर्व में अपनी हार के बाद, आईएस ने तीसरे देशों या स्थानों में खुद को बनाए रखने की दिशा में कई प्रयास किए हैं। अफगानिस्तान और पाकिस्तान में इसके प्रयास जारी हैं। दक्षिण पूर्व एशिया में इसने फिलीपींस में अबू सय्यफ जैसे समूह को हटा कर खुद राज करने का प्रयास किया था। अंतर्राष्ट्रीय आतंक की प्रतिस्पर्धी दुनिया में, आईएस अपनी मौजूदा प्रधानता को बनाए रखने की पूरी कोशिश करेगा, और ऐसी स्थिति में किसी भी तरह की लापरवाही (जैसा अल कायदा जैसे अन्य प्रमुख समूहों के मामले में की गयी थी) वर्षों से मध्य पूर्व द्वारा किये गये सारे प्रयासों को बर्बाद कर देगा। आईएस, फिलीपींस में मारावी में हुए नुकसान, अफगानिस्तान और पाक में थोड़ी प्रगति और हाल ही में सीरिया में इदलिब में हुए नुकसान से हताश था, इसलिए वह अपने आप को साबित करने के लिए शायद और कई प्रयास करेगा।

अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के अनुसार,बम विस्फोट की घटनाओं की एक दूसरी श्रृखंला अभी भी जीवित है। निश्चितरूप से इसकी भी संभावना है आईएस ने न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च में हुई हत्याओं का बदला ईसाइयों से लेने के लिए श्रीलंका में इस तरह की घटना को अंजाम दिया हो। ईस्टर,जो सबसे उपयुक्त समय था क्योंकि चर्चों और पांच सितारा होटलों में पश्चिमी पर्यटक (फिर से बड़े पैमाने पर ईसाई) बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हांलाकि, क्राइस्टचर्च में हुई घटना और श्रीलंका में हुई घटना के बीच पांच सप्ताह का समय था, जो इतनी बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए बहुत कम समय है। क्राइस्टचर्च की घटना शायद इसके लिए केवल एक औचित्य बन गया हो। यह माना जा सकता है कि आईएस का यह ऑपरेशन पहले से ही नियोजन चरणों में था और क्राइस्टचर्च की घटना ने इसे और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया हो।

भारत के लिए यही कहा जा सकता है कि भारत इस घटना से बाल-बाल बच गया, ऐसा इसलिए कि ऐसी घटना दक्षिणी भारत में भी की जा सकती थी, लेकिन भारतीय खुफिया तंत्र आईएस के लिए सबसे बड़ी बाधा है। अब एक सवाल सभी से है कि क्या हमे अपनी खुफिया एजेंसियों के मूल्यों का एहसास है, जिन्होंने 26/11 के बाद से भारत को अब तक सुरक्षित रखा है।

भारत में भी ऐसे समूह है, जो ऐसी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए संसाधन (हथियार और विस्फोटक सामग्री) उपलब्ध करा सकते है या इन्हें आसानी से आत्मघाती हमलावर के रूप में प्रेरित कर सकते है। जम्मू-कश्मीर में इस तरह का खतरा सबसे अधिक है, जो भारत को संवेदनशील बनाता हैं। इसलिए भारत और श्रीलंका को गहन खुफिया सहयोग और सामाजिक गतिशीलता की समझ की आवश्यकता है, जिससे इस तरह के कृत्यों को रोका जा सकेगा।

GS World टीम...

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर एक व्यापक अभिसमय (CCIT)

क्या है?

- यह मसौदा वर्ष 1996 में भारत द्वारा तैयार किया गया था, जो आतंकवाद के खिलाफ व्यापक एवं एकीकृत कानूनी ढाँचा प्रदान करता है।
- CCIT एक कानूनी ढाँचा प्रदान करता है, जो हस्ताक्षरकर्त्ता देशों पर यह बाध्यता आरोपित करता है कि वे आतंकवादी संगठनों को वित्तीय सहायता अथवा शरण प्रदान नहीं करेंगे।
- इसमें प्रावधान है कि आतंकवाद की सार्वभौमिक परिभाषा हो, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा के सभी सदस्य देश अपने आपराधिक कानून में शामिल करेंगे।

उद्देश्य

- आतंकवाद की सार्वभौमिक परिभाषा के लिये यूनाइटेड नेशन जनरल असेंबली (UNGA) के सभी 193 सदस्य देश इस आपराधिक कानून को अपनाएंगे।
- सभी आतंकवादी समूहों पर प्रतिबंध लगाना और आतंकवादी शिविरों को बंद करना।
- विशेष कानूनों के तहत सभी आतंकवादियों पर मुकदमा चलाना।
- वैश्विक स्तर पर सीमापार आतंकवाद को प्रत्यर्पण योग्य अपराध घोषित करना।

गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 क्या है?

- यह कानून भारत में गैरकानूनी कार्य करने वाले संगठनों की कारगर रोकथाम के लिए बनाया गया था।
- इसका मुख्य उद्देश्य देश विरोधी गतिविधियों के लिए कानूनी शक्ति का प्रयोग करना है।
- इस अधिनियम के अनुसार यदि कोई राष्ट्रद्रोही आन्दोलन का समर्थन करता है अथवा किसी विदेशी देश द्वारा किये गये भारत के क्षेत्र पर दावे का समर्थन करता है, तो वह अपराध माना जाएगा।
- यह 1967 में पारित हुआ था।बाद में यह पहले 2008 में और फिर 2012 में संशोधित हुआ था।

अधिनियम के कुछ विवादित प्रावधान-

- इसमें आतंकवाद की जो परिभाषा दी गई है, वह उतनी स्पष्ट नहीं है। इसलिए अहिंसक राजनैतिक गतिविधियाँ और राजनैतिक विरोध भी आतंकवाद की परिभाषा के अन्दर आ जाता है।
- यदि सरकार किसी संगठन को आतंकवादी बताते हुए उस पर प्रतिबंध लगा देती है, तो ऐसे संगठन का सदस्य होना ही एक आपराधिक कृत्य हो जाता है।
- इस अधिनियम के अनुसार किसी को भी बिना आरोप-पत्र के 180 दिन बंदी बनाया जा सकता है और 30 दिनों की पुलिस कस्टडी में लिया जा सकता है।
- इसमें जमानत मिलने में कठिनाई होती है और अग्रिम जमानत का तो प्रश्न ही नहीं उठता।
- इसमें मात्र साक्ष्य के बल पर किसी अपराध को आतंकवादी अपराध मान लिया जाता है।
- इस अधिनियम के अन्दर विशेष न्यायालय बनाए जाते हैं, जिनको बंद कमरे में सुनवाई करने का अधिकार होता है और जो गुप्त गवाहों का उपयोग भी कर सकते हैं।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. श्रीलंका के संबंध में कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) श्रीलंका की राजधानी का नाम कोलम्बो है।
(b) श्रीलंका में सबसे ज्यादा आबादी सिंहली बौद्धों की है।
(c) पाक जलडमरूमध्य श्रीलंका और भारत को अलग करती है।
(d) हम्बनटोटा बन्दरगाह श्रीलंका के पूर्वी तट पर स्थित है।

1. Which Statement is not correct regarding Sri Lanka.

(a) Colombo is the capital of Sri Lanka.
(b) Sinhala Buddism has the highest population in Sri Lanka.
(c) Palk Strait seperate India and Sri Lanka.
(d) Hambantota port is situated on the Eastern Coast of Sri Lanka.

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न:-1 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की कमी के चलते वैश्विक समुदाय के सक्षम होने के बावजूद आतंकवाद को जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता है।' इस कथन की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। (250 शब्द)

Q. Terrorism has not been uprooted, even the global community being capable of doing so due to lack of international cooperation. Critically analyse this statement. (250 Words)

प्रश्न:-2 वर्तमान समय में हुये अधिकांश आत्मघाती हमलों के पीछे धार्मिक कट्टरता विद्यमान है। क्या धार्मिक कट्टरता का आतंकवाद से सीधा संबंध है? विवेचना कीजिए। (250 शब्द)

Q. Religious fanaticism is behind most of the suicide bombing in present time. Is religious fanaticism directly related to terrorism? Analyse. (250 Words)

नोट : 26 अप्रैल को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(b) होगा।